ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व

Dr. Sushma Yadav

PhD in History, Department of History, Faculty of social science, Banaras Hindu University, India.
Email ID – kmyadavsushma@gmail.com

How to Cite the Article: Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i8.2026.5-21

Keywords	*Abstract*
स्त्री और पुरुष ऊर्जा, कुंडलिनी जागरण, अर्धनारीश्वर रूप, सात दिव्य ऊर्जा चक्र, नाथ सम्प्रदाय, प्रणामी सम्प्रदाय, कबीर, दादू, प्राणनाथ, आध्यात्मिक जागरण, मूलाधार चक्र(Root Chakra), स्वाधिष्ठान चक्र(Sacral Chakra),मणिपुर चक्र(Solar Plexus Chakra), अनाहत चक्र(Heart Chalra), विशुद्धि चक्र(Throat Chakra), अंजना चक्र(Third Eye Chakra), सहस्त्रार चक्र(Crown Chakra), सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण,	संसार का कोई भी पुरुष मात्र पुरुष भर नहीं होता, न ही स्त्री मात्र स्त्री भर। दोनों ही स्त्री और पुरुष ऊर्जा का सम्मिलित रूप है। एक पुरुष जब सिर्फ अपनी पुरुष ऊर्जा को ही आधार मानकर उसको ऊपर उठाकर जीवन जीना शुरू कर देता है तो दुनिया में पुरुष उर्जा और अधिक बढ़ जाती है। नतीजन, दुनिया में युद्ध, तनाव, संघर्ष, जैसी ऊर्जा का बढ़ जाना, परिस्थिति उत्पन्न हो जाना। पुरुष ऊर्जा यानी (मैस्क्युलिन इनर्जी) संकेत (indicate) करती है चेतना को, 3D वर्ड को यानी भौतिक दुनिया (materialistic world) को। जबकि स्त्री ऊर्जा (फैमिनाइन इनर्जी) यानी स्त्री ऊर्जा दर्शाती है पोषण को, सक्रिय भावना को, प्रेम को, समर्पण को और सहज बुद्धि या अन्य: प्रज्ञा को (Intuition Power) को, अध्यात्मिक दुनिया को यानी 5D world को। मानव शरीर ऊर्जा का सम्मिलित रूप है। ये तरंगें निरंतन उठती रहती है मनुष्य के मूलाधार से लेकर सहस्त्रात तक। मनुष्य के कार्य उसके विचार उसकी भावनाएं उसका दैनदिन की क्रियाएं इन्हीं चक्रों पर आधारित होती है। कौन सा चक्र शरीर में कितना जाग्रत और कितना संतुलित अवस्था में है ये मनुष्य के कार्यकलापों उसके विचारों से पता चलता है। जैसे कृष्ण ने अपनी गीता में मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आधार गुणों को माना है, जिसमें सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण आतें हैं। इसी को उर्जा के रूप में 7 चक्रों की उर्जा से जाना जाता है जोकि स्त्री और पुरुष को पूर्ण बनाते हैं। यह कोई नयी कहानी या सिद्धांत नहीं बल्कि भारतीय दर्शन का सबसे प्राचीन और मनुष्य की होने को निशानी है। पुरुष और स्त्री ऊर्जा के मिलन बिंदु को ही, इन दोनों ऊर्जाओं के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

शिवशक्ति ।	साथ-साथ होने को मनुष्य के भीतर ही भारतीय दर्शन में अर्द्धनारीश्वर रुप भी कहा गया है। जो हर मनुष्य चाहे स्त्री हो या कि पुरुष दोनों में चैतन्य रूप से व्याप्त है। जरुरत है तो मात्र उसको पहचानने की। इसी अर्धनारीश्वर रूप को या इन दो ऊर्जाओं को भक्ति संत अपने जीवन में कैसे जगा रहे थे ? कैसे इसको अपने अस्तित्व में उतार कर अपने दैनंदिन जीवन की गतिविधियों से दो-चार हो रहे थे। अपने जीवन को परमात्मा के प्रति समर्पण कर अपने व्यावहारिक जगत और आध्यात्मिक जगत को धन्य बना रहे थे उसमें संतुलन स्थापित कर रहे थे इसी पर आधारित है यह सम्पूर्ण लेख।

मूल आलेख-

भारतीय दर्शन में अर्द्धनारीश्वर रूप को बहुत अधिक महत्व प्रदान किया गया है यह महज एक स्त्री और पुरुष के शरीर संरचना की, देह, या लिंग भर की बात नहीं थी बल्कि दो ऊर्जाओं का मिलन केन्द्र था एक ही शरीर में। जिसे हम शिव और शक्ति का रूप से भी जानते हैं। मानव शरीर को जब हम और अधिक गहराई से समझते हैं तो यह शरीर महज हाड़-मांस का ढांचा भर नहीं है। बल्कि यह ऊर्जा से भरा हुआ शरीर है। जिसमें 7 दिव्य ऊर्जा या चक्रों की बात करते हैं हम। यह शरीर इन्हीं ऊर्जा के सात चक्रों से निर्मित है जिसमें मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, अंजना, और अन्तिम सहस्रार चक्र है। इन सात चक्रों में नीचे के तीन चक्र पुरुष ऊर्जा को दर्शातें हैं और ऊपर के चार चक्र स्त्री ऊर्जा को। शरीर के नीचे के तीन चक्र भौतिक दुनिया का संकेत है और ऊपर के अध्यात्मिक जागरण के अध्यात्मिक दुनिया को। एक मनुष्य चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। आधे चक्र से दुनिया को अपने जीवन को जिये तो वह कभी स्वयं को सम्पूर्ण नहीं पायेगा। इसके लिए आवश्यक है कि स्त्री हो या पुरुष उसे अपने सातों चक्रों की ऊर्जा को जागृत कर जीवन जीये उस ऊर्जा को ध्यान के माध्यम से समझने की उसको जगाने की। जिससे वह एक सम्पूर्ण मनुष्य बन सके और संसार के बीच एक संतुलन बना सके साथ ही भौतिक और आध्यात्मिक मिलन का संतुलन बना रह सके । शिव शक्ति का यह रूप इसी संतुलन को दिखाता है मनुष्य जीवन में।

नाथपंथ में इस शिव और शक्ति रूप को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है विशेषकर शक्ति को। जिसके बिना शिव का भी कोई अस्तित्व नहीं है यह शक्ति जब अपने जाग्रत अवस्था में आती तो वह चेतन होकर शिव से मिलती है यही पर शिव और शक्ति का पूर्ण मिलन होता है। यही पूर्ण ऊर्जा का केन्द्र है।

"प्रलयकार में इन समस्त तत्वों को नि:शेषभाव से आत्मसात करके शक्ति परमशिव में तत्वरूपा होकर अवस्थान करती है इसलिए 'वामकेश्वरतंत्र' में भगवती शक्ति को "कवलीकृतानि: शेषतत्वयाम स्वरुपिणी" कहा गया है। इस अवस्था में शिव को कार्य- कारण के कर्तृत्व नहीं होता अर्थात् कार्य-कारण के चक्र के संचालन कर्म में विरत हो जाते हैं। वे कुल और अकुल के भेद से परे हो जाते हैं और अव्यक्तवस्था में विराजमान रहते हैं इसीलिए इस अवस्था में उन्हें शास्त्रकरण स्वयं कह कर स्मरण करते हैं। इस परमशिव को जब सृष्टि करने की इच्छा उत्पन्न होती है तो इच्छायुक्त होने के कारण उन्हें सगुण

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

शिव कहा जाता है। यह इच्छा (= सिसृक्षा = सृष्टि करने की इच्छा) ही शक्ति है। इस अवस्था में परमशिव से एक ही साथ दो तत्व उत्पन्न होतें हैं। "शिव और शक्ति।" वस्तुत: दोनों में कोई भेद नहीं है यह शक्ति पांच अवस्थाओं से गुजरती हुई स्फुरित होती है। (1) परमशिव की अवस्था मात्र धर्म से युक्त स्फुरित होने की पूर्ववर्ती और प्राय: स्फुरित होने के उपक्रांत अवस्था का नाम **'निजा'** है इस अवस्था में शिव अपने अव्यक्त रूप में रहते हुए भी स्फुरणोन्मुखी शक्ति से विशिष्ट होकर रहा करतें हैं। शिव की इस अवस्था का नाम 'अपरं पदमं' है धीरे- धीरे शक्ति क्रमशः (2) स्फुरण की ओर उन्मुख होती है, फिर (3) स्पन्दित होती है, फिर (4) सूक्ष्म अहन्ता (= मैं पन अर्थात अलगाव का भाव) से युक्त होती है और अंत में, (5) चेतनाशीला होकर अपने अलगाव के बारे में पूर्ण सचेत हो जाती है। ये अवस्थाएं क्रमश: परा, अपरा, सूक्ष्मा, और कुण्डली कहीं जाती है। इन अवस्थाओं में शिव भी क्रमशः परम, शून्य निरंजन और परमात्मा के नाम से प्रसिद्ध होते हैं। इस प्रकार निखलानन्दसन्दोह शिव पांच अवस्थाओं से गुजरते हुए प्रथम तत्व परमात्मा या सगुण शिव के रूप में प्रकट होतें हैं और शक्ति भी पांच अवस्थाओं से अग्रसर होती हुई द्वितीय तत्व कुण्डली या कुण्डलिनी के रूप में प्रादुर्भूत हुई यही कुण्डली समस्त विश्व में व्याप्त शक्ति है इसी के इच्छा से, इसी की सहायता से शिव इस प्रपञ्च की उत्पत्ति चालन और विलय में समर्थ होतें हैं। यही परमात्मा और कुण्डली- शिव और शक्ति - प्रथम दो सूक्ष्मतम तत्व है। इन से ही अत्यंत सूक्ष्म 'पर पिण्ड' की उत्पत्ति हुई"[1]

विडम्बना यह है कि जो रूप मनुष्य जीवन के लिए सबसे उपयोगी, महत्वपूर्ण, सहयोगी था व्यावहारिक जीवन के लिए वह मात्र दर्शन बनकर रह गया और यहां तक कि भुला दिया गया उसके रुप को महत्व को। लेकिन कोई भी रुप कब तक छुपा रह सकता है। **'विज्ञान भैरव तंत्र'** में इस शिवशक्ति स्वरूप का सविस्तार वर्णन मिलता है। जिसमें शक्ति शिव से सवाल करतीं हैं जिसके उत्तर शिव प्रत्यक्ष न देकर परोक्ष रूप से देतें है यानी उन सवालों का उत्तर शिव क्रिया के माध्यम से जानने को कहते हैं शक्ति को। यह क्रिया ही शक्ति है और विचार शिव। जब कोई मनुष्य अपने विचार को, चेतनतना को एक रूप देकर उसको व्यावहारिक स्तर पर करने को उद्धत होता है। वही उसकी शक्ति है। यह शक्ति जब सांसारिकता से अध्यात्म की ओर अपने सच्चे स्वरूप को जानने के लिए आगे बढ़ती है। सोई शक्ति जब अपने आपको पहचानती है और शिव की ओर, अपनी उच्चतम शिखर अपनी चेतना की ओर बढ़ती है तो वह मिलन कहलाता है शिव और शक्ति का।

वेदों उपनिषदों के बाद इस शिवशक्ति रूप को, ऊर्जाओं को, अर्धनारीश्वर रूप को महत्व प्रदान किया गया नाथ सम्प्रदाय में (लगभग शताब्दी 9 – 11 में) विशेषकर गोरखनाथ ने। जिसमें कुंडलिनी जागरण की बात की गई। इसके बाद स्त्री -पुरुष ऊर्जा की इस सम्मिलित रूप की महत्ता हमको भक्ति संतों में दिखाई पड़ती। इस रूप का महत्व यही पर समाप्त नहीं हो जाता यह परम्परा आगे भी हमें दिखाई पड़ती है। भारतीय आधुनिक जगत के जाने माने दार्शनिक, अध्यात्मिक,

[1] द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2010). नाथ सम्प्रदाय, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ सं- 102-103.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

लेखक, आचार्य अरविंदों घोंष की वास्तविक जीवन में और उनकी पुस्तकों में जिसमें प्रमुख हैं सावित्री, अरविंदों घोष और मां का रिश्ता कुछ ऐसा ही अध्यात्मिक था जिनके आस पास होते हुए वह अपनी कुंडलिनी शक्ति या एक दिव्य ऊर्जा को अपने स्वयं में होता हुआ महसूस करते थे।

अपने इस आर्टिकल में मैंने इसी अर्धनारीश्वर रुप का स्त्री - पुरुष ऊर्जा को संतों की साधना में देखने का एक प्रयास किया है। विशेषकर भक्ति संतों के काव्य में उनकी साधना में उनके व्यवहारिक जीवन को ध्यान में रखते हुए।

विशेषकर जैसे कबीर, रैदास, दादू, प्राणनाथ आदि कुछ महत्वपूर्ण संत जिन्होंने एक तरफ तो ज्ञान और बोध को फैलाया व्यावहारिक जगत के बीच रहकर अपनी पुरुष ऊर्जा से जीवन जिया कर्म करके। वहीं जब साधना में अपने भक्ति को चरम पर पहुंचाना था, अपने आराध्य के दर्शन की प्यास जगी उनमें तो पुरुष बनकर नहीं, पुरुष ऊर्जा का प्रयोग करके नहीं बल्कि स्त्री बनकर स्त्री तत्व को जगाकर अपने आराध्य को अपने प्रियतम को पुकारा। प्रेमिका बनकर पुकारा प्रेम की खातिर अपने आराध्य की एक झलक पाने की खातिर। संतों ने यह रूप, यह स्त्रैण भाव संसार के सामने पेश किया बजाय लोक लाज मर्यादा को सोचकर। मर्द को दर्द नहीं होता इस सामाजिक धारणा को तोड़कर उन्होंने अपने आराध्य के प्रेम में स्वयं को रंगकर अपना स्त्री रुप जगत के सामने पेश किया।

भक्ति आन्दोलन के संतों, योगियों में अगर बात की जाए तो सबसे पहले **नाथ योगियों** ने इस रुप का वर्णन किया हैं। वो शिव और शक्ति को दो अलग-अलग रुप न मानकर एक ही रुप में देखते हैं। एक ही शरीर में दो उर्जाओं के रूप में, जिसमें शक्ति जो कि प्रकृति को दर्शाती है जिनका कार्य है रचनात्मकता पोषण, प्रेम, समर्पण और अध्यात्म को जानना। मूलाधार चक्र में स्थित यह उर्जा शक्ति है और शिव जोकि चेतना का प्रतीक हैं मतलब कि पुरुष ऊर्जा जिसका कार्य है तर्क संहार और ज्ञान और भौतिकता का युक्त जीवन यापन करना। जब तक शक्ति सोई रहती है मूलाधार में तब तक मनुष्य चाहे स्त्री हो या पुरुष आधा ही रहता है या कह लें कि प्राणी बिना शक्ति के कुछ भी कर पाने में असमर्थ है। पुरुष के अंदर और बस पुरुषत्व रहता है और स्त्री इस शक्ति के अनभिज्ञता में अपने सच्चे स्वरूप को कभी जान ही नहीं पाती। लेकिन जब शक्ति अपने मूलाधारचक्र से धीरे-धीरे उठती है शिव की तरफ। मतलब कि चेतना की तरफ या कह लीजिए सहस्त्रात्र की तरफ और वहां पहुंच कर जब वह अपनी चेतना से जाकर मिल जाती है, एक हो जाती हैं। वहीं पूर्ण रूप बनता है अर्धनारीश्वर का या शिवऔर शक्ति का। वही मिलन केन्द्र है। एक मनुष्य का वही पूर्ण रूप भी जब उसके भीतर की दोनों उर्जायें एक हों जाये। नाथपंथी इसी को कुंडलिनी जागरण कहते हैं।

“इस शरीर में सबसे प्रधान कार्यकारिणी शक्ति कुंडलिनी है। यह विश्व – ब्रह्मांड में व्याप्त महाकुण्डलिनी का ही स्वरूप है”[2]।

[2] वही पृष्ठ सं- 10.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

यह कुंडलिनी जागरण मनुष्य के लिए बहुत जरूरी है। तभी मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप को अपने निज को बेहतर जान सकता है और स्वयं को पूर्ण महसूस कर सकता है। यह सिर्फ अध्यात्म की दृष्टिकोण से लाभकारी ही नहीं है बल्कि भौतिक सुख के लिए भी आवश्यक है। इस दुनिया में इस संसार में ज़ीने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी अति आवश्यक है क्योंकि जीवन में तभी संतुलन आ सकता है भौतिकता और आध्यात्म के बीच जब दोनों ऊर्जाओं में संतुलन बना रहेगा। मनुष्य की निर्मित ऐसी है कि वह सिर्फ भौतिक और भौतिक बनकर ही जीवन नहीं जी सकता है अध्यात्म उसको चाहिए ही चाहिए उसके बैचेन मन की लिए, जीवन की इस पिपासा की शांति के लिए और मनुष्य सिर्फ़ और सिर्फ़ अध्यात्मिक बनकर भी नहीं जी सकता है। संसार में रहने के लिए भौतिक वस्तुओं की भी आवश्यकता है उसके लिए शक्ति की आवश्यकता है। कर्म करने की शक्ति की। इसलिए जब दोनों उर्जायें एक बराबर होंगी तब जीवन की सार्थकता है और आनंद भी है।

नाथपंथियों का मानना है -

"यद्यपि वेदान्तिक लोग भी चितस्वरूप ब्रह्म की शक्ति जिसे वे लोग 'माया' कहते हैं; मानते हैं पर यहां शक्ति की जो कल्पना है यह वेदान्तिक कल्पना से भिन्न है। यहां 'कुण्डली' या 'शक्ति' को चिच्छीला और चिद्रूपिणि माना गया है। यह चिच्छक्ति अनन्तस्वरूपा और अनन्तशक्तिरूपा है। जगत इसी शक्ति का परिणाम है और यही शक्ति जगत रूप में परिणित होती है। इसी को सहायता से परमशिव सृष्टि व्यापार के संभालने में समर्थ होतें हैं और इसीलिए "वामकेश्वरतंत्र" में स्वयं भगवान शंकर ने कहा है कि हे परमेश्वरी इस शक्ति से रहित होने पर शिव कुछ भी करने में असमर्थ है इससे युक्त होकर ही वे कुछ करने में समर्थ होतें हैं"[3]

अब आते हैं मध्यकाल में शुरू हुए भक्ति आन्दोलन के प्रमुख भक्ति संतों पर उनके यहां यह रूप कैसे दिखाई पड़ता है हमको। भक्ति संतों की प्रमुख विशेषता है उनका गुण है कह लीजिए कि हैं तो संसार के समाज के बीच में भौतिक जीवन जीते हुए लेकिन संसार से बिल्कुल विरक्त सांसारिक मोह से बिल्कुल विलग। उन्हें बस इतना चाहिए कि दो जून भोजन मिल जाए स्वयं के लिए और वह भी अपनी मेहनत, अपनी ही कमाई, पेशे और रोजगार से न कि भीख से संसार के लोगों से शासक सत्ता के दीन वो करम पे। साथ ही जो भी द्वार आये उनके उनको भी वह भोजन मदद आदि दे पायें और उसी संसार समाज उस जीवन के बीच परमात्म का भजन भी निरंतर अहर्निश कायम रख सके। संगीत के रूप में कहीं बाहर नहीं बल्कि स्वयं के भीतर अपने आत्म में ही। यही उनकी कामना रहती थी या कह लीजिए ऐसा ही जीवन था उनका।

इन भक्ति संतों के जीवन को देखेंगे तो पायेंगे कि एक तरफ तो ये चेतन स्वरूप होकर भौतिक तत्वों के बीच में जीवन यापन कर रहे समाज के लोगों को दिशा भी दिखा रहे थें अपने ज्ञान से। साथ ही सामाजिक आडम्बरों का,

[3] वही पृष्ठ सं- 111.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

परम्परागत तरीके से चली आ रही अनेक मान्यताओं पर सवाल भी उठा रहे थे पुरजोर तरीके से पूरे तर्क के साथ। इनके इन विचारों का समाज के व्यापारी, पेशेवर, दस्तकार अन्य वर्ग समर्थन भी कर रहा था और उनकी छत्रछाया तले आकर उन बातों का उनके ज्ञान को अपने जीवन में उतार भी रहे थें। एक तरफ तो यह रुप हम देखते हैं भक्ति संतों का जिरह आलोचना तर्क की बात करने वाला। दूसरी तरफ यही संत जब पूर्ण भक्ति भाव में होतें हैं पूर्ण समर्पण के भाव में होतें हैं अपने आराध्य के प्रति तो उससे इस प्रकार वार्तालाप करते हैं, संवाद स्थापित करते हैं मानों कोई स्त्री। जो अपने प्रेमी के प्रति पूर्ण समर्पण लिये उसकी बाट जोह रही हो। उसे बार-बार अपने प्रेम का याद दिला रही हो बार-बार प्रेम का फूल चढ़ा रही हो और प्रेमी के न आने पर न सुनने पर उलाहना भी देती हो। कुछ इसी प्रकार ही भक्ति संत अपने भीतर की स्त्री ऊर्जा को जगाकर परमात्मा के प्रति अपना प्रेम जाहिर करते हैं। हम कह सकते है कि यह मिलन ही यह चेतना और ऊर्जा का उनके जीवन में शिव और शक्ति रूप को दर्शाता है जीवन में। उन्होंने केवल पुरुष बनकर स्वयं को पुरुष मानकर अपने आराध्य को नहीं पुकारा बल्कि स्त्री तत्व को जगाकर एक स्त्री बनकर पुकारा। यह स्त्री भाव इतना प्रबल है, इतना प्रगाढ़ है कि जान ही नहीं पड़ता उनके काव्य को पढ़कर कि यह किसी पुरुष द्वारा कही गयी पंक्तियां हैं। यहां तक कि स्वयं के लिए ये भक्ति संतकवि अपने काव्य में कहीं- कहीं पर परमात्मा के प्रति, अपने आराध्य की नार, स्त्री, दुल्हिन अरंधाग जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

प्राणनाथ के भीतर की यह स्त्रैण उर्जा, ये स्त्रैण भावनाएं, यह रुप अपने आराध्य के प्रति कुछ इस तरह व्यक्त होती है।

मैं अबला अरधांग हों, पिऊ की प्यारी नार
सब जगाऊं सोहागिनी, तब मुझे होए करार ।।[4]

आगे **प्राणनाथ** स्वयं को पुरुष मानकर नहीं बल्कि स्त्री मानकर अपने आराध्य से कहतीं हैं।

तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात।
इसक सो सेवा करूं, सब अंगो साख्यात ।।[5]

कबीर साहब के भीतर की यह स्त्रैण उर्जा तो ऐसे प्रबल जागती है जब वो अपने अरधांग को अपने प्रिय को अपने आराध्य राम को अपने घर बार-बार बुलाती है और बार-बार मिन्नतें करती है प्रेम की। जैसे कोई स्त्री अपने प्रियतम से कह रही हो कि जब तक प्रियतम अंग लगकर प्रेम जाहिर न करें आत्मा को प्रेम से प्रफुल्लित न कर दे तब तक भला कैसा प्रेम ?

[4] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री कलश हिन्दी, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 47.
[5] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 169.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

कबीर कुछ इसी भांति स्त्री बनकर कहते हैं अपने प्रियतम राम से

बालम आवो हमारे गेह रे।

तुम बिन दुखिया देह रे।

सब कोई कहें तुम्हारी नारी, मोको यह अंदेह रे।

एकमेक ह्वै सेज न सोवैं तबि लगि कैसा नेह रे।

अन्न न भावै नींद न आवै, गृह बन धरै न धीर रे।

ज्यूं कामी को काम पियारा, ज्यूं प्यासे क्यूं नीर रे।

है कोई ऐसा पर उपकारी, हरि सूं कहै सुनाइ रे।

ऐसे हाल कबीर भए हैं, बिन देखे जीव जाइ रे।[6]

प्रणामी सम्प्रदाय के प्रमुख संत प्राणनाथ कबीर से भी आगे निकल गये। वह तो अपने आराध्य के साथ वैवाहिक पगफेरे तक लेने की बात करतें और यह भी साथ-साथ कहते हैं कि उन्हें समाज से किसी बात का भय या लाज नहीं है कि कोई क्या सोचेगा ? उनके लिए तो केवल उनके प्रिय, उनके आराध्य, उनके धनी ही मायने रखते हैं बाकी सगरी दुनिया एक किनारे।

प्राणनाथ कहते हैं -

मैं जो आई व्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन

बांधे पालव सों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन।।

सत पर सत दोऊ परवत, तोरन बांधें हैं बंध।

बिन थलिए विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध।।

मंडल अंखड में मांडवा, चोरी थंभ रोपे है चार।

सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार।।

[6] दास, बाबूश्यामसुंदर. (1928). कबीर ग्रंथावली, काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ सं-144.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

एक ब्रज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट।

चारों थंभो चोरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट।।

तीन फेर दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई।

अब एक लीला सब गावसी, सब मिलि करि है सही।।[7]

कबीर साहब भी अपने को हरि की बहुरिया के रूप में देखते हैं और अपने प्रियतम, अपने आराध्य, अपने स्वामी से मिलन की चाह रखते हुए कहती हैं, कि इस बार अगर मिलन हो जाए तो कभी भी इस भौजल न आऊं इस भौतिक माया जाल में फिर कबहूं न फंसूं।

कबीर कहते हैं या कहती हैं दोनों रुप देखिए

हरि मेरा पीव भाई, हरि मेरा पीव

हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव

हरि मेरा पीव, मैं हरि की बहुरिया। राम बड़े मैं छटुक लहुरिया।

किया स्यंगार मिलन के ताईं। काहे न मिलो राजा राम गुसाईं।

अब की बेर मिलन जो पाऊं। कहै कबीर भौ जल नहिं आऊं।[8]

प्रेम की यह प्रगाढ़ता इतनी है कि स्वयं को बेलीक भी घोषित कर देंतें हैं प्राणनाथ। समाज वाले, दुनिया वाले चार बातें बनाते हैं तो बनायें उनके प्रेम को लेकर। वह स्वयं ही सारी बंदिशें सारी बेड़ियों को् तोड़ आजाद कर लेते हैं स्वयं को पहले ही। मानो कह रहे हो हां अब होगा मुकाबला प्रेम प्रेमी और इन समाज वालों के मध्य। साथ ही ऐसे कुल जात मरजादा रूपी बंधन में जकड़े लोगों को बार-बार अपनी संगत करने को मना भी करते हैं ताकि उनके समान कोई और न बिगड़ जाए (भक्ति संतों में कबीर हो या प्राणनाथ समाज के लोगों ने बेलीक खूब घोषित किया है कोई हिन्दू का दुश्मन बताता था कोई मुसलमानों का और यहां तक उनके ऊपर आरोप लगते थे समाज की व्यवस्था को परंपरागत सामाजिक ढांचे पर प्रहार करने के लिए भी। किसी एक धर्म पर न चलने के भी आरोप लगे उनपर। इसी को लेकर ये भक्ति संत भी तंज कसते थे कि भाई वही लोग उनकी संगति करें जो बिगड़े लोग हैं। जिन्हें अपना घर भूंकना हो। जिन्हें अपनी खुद की

[7] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 137-138.

[8] अग्रवाल, पुरषोत्तम. (2009). अकथ कहानी प्रेम की कबीर की कविता और उनका समय, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ सं- 226.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

बनाई लीक प्यारी हो क्योंकि समाज के उच्च और इज्जतदार लोगों ने उनको बिगडैल जब साबित ही कर दिया है तो उसको फिर जगजाहिर क्यों न कर दिया जाए)

इसीलिए प्राणनाथ कहते हैं -

इसक लगाए पिआसों पूरा, खेले अबला होए अहेनिस।
ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस ॥
उलटा एक चलती है यामें, मैं छोड़ी दुनियां की राह।
तोड़ी मरजाद बिगड़्या विस्वथें, मैं तो पतितनको पातसाह ॥
मैं तो बिगड़्या विस्वथें बिछुड़्या, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई।
बेर बेर बरजत हों ये बाबा, न तो हम ज्यों बिगडेगा सोई ॥[9]

इंसान चाहे व्रत करे उपवास करें रोजा नमाज करें दिन- रात या फिर तरह-तरह प्रकार से शरीर को तोड़ मरोड़कर कर ध्यान आराधना करे। चाहे तिलक कंठी माला पहनकर भभूत चंदन इत्यादि लगाकर पूजा अर्चना करे। जब तक उसके भीतर सहज, सरल प्रेम और अहंकार रहित भक्ति का जन्म नहीं होता परमात्मा के स्वरूप को वह कभी न जान सकेगा। न ही इन हजार तरह की तिकड़मबाजी करके इन बंधनों से मुक्ति पावेगा। सहज प्रेम ही एक रास्ता है जो भक्ति में साधना में हर तरह के कर्मकांडों से मुक्ति दिलाकर परमात्मा के दर्शन करा देता है। अगर प्रेम न जगा तो ये हजार तरह के कर्मकांडो का कोई महत्व नहीं। प्राणनाथ इसलिए सबसे अधिक प्रेम और इश्क पर जोर देते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम ही इस जीवन का आधार है और उस परमसत्ता को जानने उसका साक्षात्कार करने का एकमात्र उपाय और रास्ता भी।

प्राणनाथ कहते हैं ऐसे लोगों से -

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊन ऊतम कामल ।
उपजो उतम जात में, पर जीवडा न छोड़े वल ॥
सौ माला बाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पीउसों, तोलो मन न छोड़े फेर ॥[10]

[9] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 19, 40, 52.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

प्रेम ही सबसे बड़ा और इस जीवन का आधार भी प्राणनाथ की दृष्टि में

इसक बड़ा रे सबन में, न कोई इसक समान।
एक तेरे इसक बिना, उड़ गई सब जहान॥
चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुन।
न्यारा इसक हिसाब थें, जिन देख्या पीउ वतन॥[11]

किरंतन में प्राणनाथ कहते हैं -

उतपन प्रेम पारब्रह्म संग वाको सुपन हो गयो संसार
प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार॥[12]

उस उच्चतम स्तर के प्रेम को कैसे पाया जा सकता है ये भी बताते हैं प्राणनाथ और कहते हैं कि जैसे ही इस अंहकार इस संसार को पीठ देंगे आप, आपका प्रियतम स्वयं ही चलकर आ जायेगा। परमात्मा जरा भी दूर नहीं है। बीच में जो माया का, अंधकार का पर्दा है बस तुझे उसी को गिराना है। कहीं से भी इन पंक्तियों को पढ़ने पर यह नहीं महसूस होता कि यह किसी पुरुष ने कहा है। मानो कोई प्रेम और समर्पण में पगी कोई स्त्री की पुकार हो, उसके ये शब्द हों। जो स्वयं को दिलासा दे रही है बार-बार अपने बेचैन मन को प्रियतम की मिलन की खातिर।

प्राणनाथ कहते हैं -

तू उलट याको पीठ दें, प्रेमें खेल पियासो रंग
ओ आए मिलेंगे आप ही, जासो तेरा है सनमंध॥
तेरे संगी तोहे अबही मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार।
महामत मनको द्रढ कर, समरथ स्याम भरतार॥[13]

प्रेम में बहुत जरूरी है समर्पण का भाव। वह तभी आ सकता है जबकि स्त्री तत्व जाग्रत होगा मनुष्य के भीतर पुरुष के भीतर जब यह उर्जा उसके पुरुष तत्व के बराबर पहुंचती है या कह लीजिए संतुलन में दोनों उर्जायें होती है तो उसमें प्रेम

[10] वही पृष्ठ सं- 37.
[11] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री कलश हिन्दी, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 31.
[12] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 20.
[13] वही पृष्ठ सं- 64.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

के प्रति समर्पण भाव भी आ जाता है। उसके भीतर का पुरुष अंहाकर पीछे हो जाता है। या कह लीजिए कि मिट जाता है। जब उसको अपने पुरुषत्व की आवश्यकता पड़ती जीवन यापन के लिए तो वह निरहंकार होकर कार्य करता है, निर्णय लेता है बिना कर्ता भाव के बिना अहं के। प्राणनाथ स्वयं भी इस प्रेम के समर्पण में पुरुष तत्व को बाधक मानते थे।

प्राणनाथ कहते हैं -

पुरुषपणे ए द्रष्टें न आवे, ए अवलापणे लीजे अंग।
पुरुष नथी ए विना कोई बीजो, थे रमे नेहेचल लीला रंग॥
ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित्त आवे, समझे सुपन परू थाए।
अखंडतणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां सेवाएं॥
पतलीने तमे पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार।
पुरुषपणे रमिया मायामां, तो आडी आवी अंधार॥[14]

अन्य संत भी कुछ इसी तरह का भाव प्रकट करते हैं अपने आराध्य से। आप किसी भी संत को देखिये उनके जीवन को। वो जब राजसत्ता, समाजसत्ता, धर्मसत्ता से जिरह करते हैं संवाद स्थापित करते हैं तो पूरे तर्क के साथ। वहां पर उनका असली ज्ञानयुक्त, बौद्धिकता से भरा उनका पुरूषपन दिखाई पड़ेगा और ऐसे जोर की बहस करते हैं कि सोया आदमी भी जग जाए। या कह लीजिए कि समाजसत्ता, धर्मसत्ता, राजनीतिकसत्ता में बैचेनी उत्पन्न हो जाए अपनी शक्ति को कायम रखने के लिए। अपनी मान्यताओं अपनी धारणाओं को यथा बनाये रखने के लिए। जैसे एक उदाहरण कबीर की उस पुरुष तत्व का उस तार्किक विचारों का। सामाजिक मान्यता को बरकरार रखने के लिए उस पर कुठाराघात करते हुए।

कबीर साहब कहते हैं -

पाथर पूजे तो हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़
याते तो चाकी भली पीसि खाएं संसार॥
मूंड मुड़ाये हरि मिले, सब कोय लेय मुंड़ाय
बार बार के मूड़ते, भेड़ न बैकुण्ड जाय॥
मानुष सोई जानिये, जाहि विवेक विचार

[14] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 177-178

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

जाहि विवेक विचार, सो नर ढोर गंवार ॥[15]

इसी तरह सामाजिक भेदभाव ऊंच-नीच को लेकर जो समाज में खाई उत्पन्न थी उस पर कहते हैं कि सारे मनुष्य तो एक ही तत्व से निर्मित है फिर कैसा भेदभाव कोई भी तो ऊपर से जान नहीं पड़ता किस जाति,धर्म मजहब का है।

कबीर कहते हैं -

पांच तत्व का पूतरा, रज बीरज की बूंद।
एकै घाटी नीसरी, ब्राह्मण क्षत्री सूद ॥[16]

एक और ऐसा तंज कसता हुआ उदाहरण समाज पर। धर्म के नाम पर चल रही बेबुनियादी चीजों पर मान्यताओं पर उसमें निहित हिंसात्मक प्रवृत्ति को लेकर जिरह करते हैं सवाल उठाते हैं संतकवि कबीर।

कबीर कहते हैं –

संतो राह दूनों हम दीठा।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानें। स्वाद सबन को मीठा ॥
हिन्दू बरत एकादशि साधे। दूध सिंघारा सेती।
अन्न को त्यागे मन को न हटके। पारन करे सगौती॥
तुरुक रोजा-निमाज गुजारे। बिसमिल बांग पुकारे।
इनको बिहिस्त कहां से होवै। जो सांझै मुरगी मारे॥
हिन्दू की दया मेहर तुरकन की। दोनों घट से त्यागी।
ई हलाल वै झटका मारें। आग दुनों घर लागी॥
हिन्दू तुरुक की एक राह है। सतगुरु सोई लखाई।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो राम न कहूं खुदाई ॥[17]

[15] कबीर, संपादक(स्वामी आनंद कुलश्रेष्ठ). बीजक, नई दिल्ली, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. , पृष्ठ सं- 28-32-116.

[16] कबीर, संपादक(स्वामी आनंद कुलश्रेष्ठ). बीजक, नई दिल्ली, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. , पृष्ठ सं- 38.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

यही कबीर अपने आराध्य के प्रति प्रेम में पूर्ण समर्पित होकर अपने पुरूषत्व के अंहकार को त्याग, अपने सारे विवेक अपनी तार्किकता को प्रेम के मार्ग में बाधक बुद्धि को एक ताक पर रखकर पूरे स्त्री भाव से, अपनी स्त्रैण उर्जा में भरकर सहज, सरल प्रेम की प्रगाढ़ता लिए और विरह की वेदना से भरकर अपने प्रियतम राम से कहते हैं अपने आराध्य को पुकारते हैं।

कबीर साहब कहते है -

आई न सकौं तुझ पै संकू न तुझ बुलाइ।

जियरा यों ही लेहु जे बिरहा तपाइ-तपाइ ।।

कबीर कै बिरहिन कूं मींच दे, कै आपा दिखलाइ।

आठ पहर का दाझणां मो पै सह्या ना जाइ ।।

बिरहिन ऊभी पंथ सिरि पंथी बूझे धाइ।

एक सबद कहि पीव का कब रे मिलेंगे आई ।।[18]

जैसे एक प्रेमिका अपने सम्पूर्ण स्त्री भाव में जब होती है। अपने प्रियतम के विरह में उसकी अनुपस्थिति में वो बार-बार दरवाजे पर एक खटका होने पर भागकर देखती है कि कहीं उसका पति उसका प्रेमी तो नहीं है। इस विरह वेदना में उसके रात-दिन इसी आशा में बीतते हैं कि कौन सा वह दिन, वह पल, वह घड़ी आयेगी जब उसका प्राणाधार उसके साथ होगा कबीर की भी कुछ यही दशा है वे कहतें इस शरीर इस मानव रुपी तन का क्या महत्व जब उनके आराध्य उनके प्रियतम राम ही न मिले उन्हें देखने न आयें।

कबीर व्यक्त करते हैं अपने इन भावों कुछ इस तरह

वै दिन कब आवेंगे माइ।

जा कारनि हम देह धरी है, मिलिबौ अंगि लगाइ।

हौं जानूं जे हिल मिलि खेलूं तनमन प्रांन समाइ।

या कामनां करौ परपूरन, समरथ हौ राम राइ।[19]

[17] कबीर, संपादक(स्वामी आनंद कुलश्रेष्ठ). बीजक, नई दिल्ली, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. , पृष्ठ सं- 180

[18] दास, बाबूश्यामसुंदर. (1928). कबीर ग्रंथावली, काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ सं- 68.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

प्राणनाथ जब संवाद करते हैं समाजसत्ता से राजनीतिकसत्ता से तब उनके तार्किक विचार कुछ इस तरह है कि मनुष्य के जीवन का एक पल का भी भरोसा नहीं है। न ही अपनी सांसों पर नियंत्रण। फिर भी यह मनुष्य माया-मोह में फंसकर तेरा-मेरा, अपना-पराया करता है और अंहकार में छाती तान कर ऐसे जीता है मानों अमर होकर आया हो। सरलता, सहजता, समर्पण को त्याग दिन रात बस दुनियावी मद में चूर यह माटी का पुतला रूपी इंसान अपने वास्तविकता से दूर होता जाता और मृत्यु के निकट आता जाता है।

प्राणनाथ कहते हैं -

साधो हम देख्या बड़ा तमासा।

विस्व देख भया मैं बिसमय, देख देख आवत मोहे हांसा॥

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।

पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजनको न देवे॥

सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाडे आप अंग।

न करे भजन दोस देवे सांई को, कहे दया बिना न होवे साध संग॥[20]

समाज में फेले जाति, धर्म, भेदभाव, ऊंच-नीच पर उनका पुरुषत्व चुप नहीं बैठता। या ये कहकर कि वह तो संत हैं, संन्यासी हैं उन्हें क्या सरोकार इन दुनियावी बातों से इन घटती तरह-तरह की सामाजिक समस्याओं से अपना पीछा नहीं छुड़ा लेतें। देख भर नहीं लेते, आंख भर नहीं चुरा लेते उन समस्याओं पर से बल्कि पूरे पुरजोर तरीके से उसका विरोध करते हैं वो

प्राणनाथ कहते हैं -

हो भाई मेरे वैस्नव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम।

नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म॥[21]

[19] वही पृष्ठ सं- 328

[20] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री किरंतन, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 7

[21] वही पृष्ठ सं- 11

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

पृथक-पृथक धर्मों को लेकर समाज में फैली खाई को लेकर प्राणनाथ एक शक्ति एक परमात्मा के स्वरूप को पहचानने को लेकर कहतें है –

धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक।

अनेक रंगे संगे ढंगे, विध विध खेलें विवेक ॥

खसम एक सबन का, नाहिंन दूसरा कोए।

एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥[22]

जब अपने आराध्य की बात आती तो यही संतकवि चाहे प्राणनाथ हो या कबीर, दादू या रैदास सब स्त्री भाव में आकर अपने प्रिय को पुकारते हैं। उनका गुणगान करते हैं। उन्हें मनाते हैं प्रेमिका की भांति और अपना प्रेम जाहिर करते हैं। दादू तो कहते हैं कि प्रेम इश्क ही तो ईश्वर का रूप है रंग है प्रेम से ही वजूद है उसका न कि तर्क से।

दादू कहते हैं -

दादू इसक अलह की जाति है

इसक अलह का अंग।

इसक अलह औजूद है

इसक अलह का रंग ॥[23]

निष्कर्ष:

इस प्रकार हम कह सकते है कि पुरुष के जीवन में पुरुष तत्व के साथ-साथ स्त्रैण तत्व का भी उसी संतुलित अवस्था में होना आवश्यक है जितना पुरुष तत्व का। ठीक उसी प्रकार स्त्री में भी पुरुष ऊर्जा का महत्व है उतना ही जितना की उसकी स्त्री उर्जा का। दोनों के मिलन से ही या कह लीजिए संतुलन में होने से उनका सर्वांगीण विकास हो सकता है एक बेहतर तरीके से। क्योंकि बिना चेतना के ऊर्जा दिशाहीन हो जाती है और बिना शक्ति के बिना ऊर्जा के चेतना शून्य हो जाती है। शक्ति ही साधक की साधना में आये अंहकार को मिटाकर उसके भीतर सहज, सरल, प्रेम को जगाती हैं और अपने आराध्य के प्रति निरहंकार भाव में

[22] महामति प्राणनाथ. (2006). श्री कलश हिन्दुस्तानी, जामनगर, गुजरात, श्री 5 नवतनपुरी नाम, पृष्ठ सं- 73.

[23] Doha of Dadu Dayal | Hindwi https://share.google/z5XdpICqc8bL9XK23

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

आकर समर्पण करना सिखाती है। तब साधक अपने पुरुष भिमान को त्यागकर स्त्रैण भाव में आकर अपने आराध्य के प्रति सम्पूर्ण तरीके से समर्पित होकर उसको पुकारता है उसका आराधन करता है। कबीर हो या प्राणनाथ या दादू या अन्य भक्ति संत प्रियतम को जब भी पुकारा तो स्त्री बनकर ही पुकारा। वह भी इस बात को अच्छी तरह जानते और मानते थे कि प्रेम के मार्ग में तर्क नहीं बल्कि सहजता पूर्ण समर्पण चाहिए। अंहकाररहित समर्पण चाहिए। तना हुआ सिर नहीं बल्कि प्रियतम के प्रेम में सिर का झुकाव चाहिए तब ही उसके प्रेम को उसके स्वरूप को जाना जा सकता है। इसीलिए जितना भक्ति संत अपनी साधना में स्त्रैण भाव से जीते थे उतना ही व्यवहारिक जगत में तर्कपूर्ण ढंग से जीवन बिताते थे। समाज में चल रही किसी भी परम्परा को मान्यताओं को ऐसे ही नहीं स्वीकार कर लेते थे बिना उसका अर्थ और महत्व जीवन में उसकी सार्थकता जाने। यही चेतना व्यावहारिक जगत में चल रही ऐसी सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था पर सवाल उठाती थी। उनका पुरजोर विरोध करती थी जो समाज को उन्नति की ओर न ले जाकर दमन भेदभाव पतन की ओर ले जा रही थी। मर्द और औरत के मध्य खाई उत्पन्न करती थी। मर्द को बस कठोर और जिम्मेदार मर्द ठहराकर और औरत को बस नाजुक बेसहारा भावनात्मक रूप से कमजोर पुरुष अनुगामिनी कहकर समाज में उसका दर्जा उसका स्थान तय कर दिया जाता था। आज भी इस आधुनिक कहीं जाने वाले समाज में इसी विचारधारा की ही प्रबलता है। इसीलिए ये समझना होगा कि पुरुष और औरत या मनुष्य बस हाड़ मांस का पुतला भर नहीं बल्कि शिव और शक्ति, पुरुष और स्त्री उर्जा का एक जीता जागता सम्मिलित रूप है। चेतना और प्रकृति का सम्मिलित रूप है। स्त्री मात्र स्त्री भर नहीं न ही पुरुष मात्र पुरुष भर। सक्रिय भावना और तार्किकता का मिला रूप है। जब- जब इन दोनों ऊर्जाओं में असंतुलन पैदा होगा मानव के भीतर इसका दुष्प्रभाव व्यावहारिक जगत में भी दिखाई देगा। इसीलिए आवश्यकता है भीतर मौजूद इन ऊर्जाओं को समझने की और उसको जगाकर अपने जीवन में उतारने उसको प्रयोग करने की। संतुलित अवस्था में। जैसे संतों ने उतारा जिया उसको अपने व्यावहारिक और साधनात्मक अपने आध्यात्मिक जगत में अपने जीवन में।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). संतों की साधना में शिवशक्ति ऊर्जा का महत्व. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),5-21.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License